STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

Subject -2nd language (Hindi)

Topic – Handwriting & Spelling

Class - V

Date – 12/06/2020

Worksheet no- 19

Time limit- 30 minutes

दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सुलेख लिखिए। रेखांकित वर्तनी को एक पृष्ठ पर लिखिए और दिनांक अनुसार सजाकर रखिए।

"बेटे! मुझे अपने घर ले चलिए मैं उनके दीदार करना चाहता हूँ। वे जरूर खुदा की भेजी हुई होंगी।"

"आइए।" नन्हा शेखचिल्ली मौलवी साहब को अपने घर ले आया। घर आकर मौलवी साहब ने शेखचिल्ली की अम्मी से पूछा–"क्या आपने खुदा को देखा है?"

"हाँ देखा है।" शेखचिल्ली की अम्मी ने कहा।

"कहाँ देखा है?"

"पहले आप बैठिए फिर आप बताइए कि आप क्या खाएँगे?"

"मैं तो खुदा को देखने आया था।" मौलवी साहब बोले।

"पहले आप आराम कीजिए। फिर खाना खाइए।" इस तरह मौलवी साहब की बड़ी सेवा की गई। वे उन दोनों के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए और दुआएँ देते हुए बोले–"बड़ा ही नेक बंदों का कुनबा (परिवार) है, अल्लाह बरकत दे। मैं इस प्यार और सेवा को नहीं भूल पाऊँगा। अब मेहरबानी करके मुझे खुदा के दर्शन करवाइए।"

अम्मी जान बोलीं–"मौलवी साहब खुदा यही प्यार और सेवा का जज़्बा है। जहाँ मुहब्बत होती है, वहीं खुदा के दर्शन होते हैं और नफ़रत से शैतान पैदा होता है। इस घर में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई सबको एक-सा माना जाता है। प्यार दिया जाता है, प्यार ही खुदा है।"

"या खुदा, तुम तो सचमुच ही खुदा की बेटी हो। हिंदुओं में जिसे देवी कहा जाता है, तुम्हारा ही रूप है।"

"मैं तो एक साधारण औरत हूँ और यह मेरा बेटा शेखचिल्ली है जिसे लोग मूर्ख कहते हैं।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। आप महान शेखचिल्ली की माँ हैं। आपके दर्शन करने से तो मुझे अनेक तीर्थों का फल मिल गया है। दरअसल आप जिसे मूर्ख शेखचिल्ली कहती हैं, वे मूर्ख नहीं हैं, ये तो महान बालक है। इन्हें लोगों ने पहचाना नहीं है।"

इस प्रकार मौलवी खुश होकर शेखचिल्ली को दुआएँ देकर चले गए।